Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582–046X
International Journal for Research in Applied History
Website : www.anshjournal.com

मेहरानगढ़ दुर्ग का कोहिनूर : वीरवर कीरतसिंह सोढा

Mr. Tanesinh Sodha
Ph.D. Scholar (Department of History)
Bhupal Nobels' University, Udaipur
Email ID : tssodha80@gmail.com

सारांश

गौरवषाली अतीत का साक्षी राजस्थान राजपूती आन, बान और षान की रक्षा के लिए अपने प्राणों को हंसते–हंसते न्यौछावर वाले वीर–वीरांगनाओं की जन्मभूमि रहा हैं। गौ, ब्राह्मण, नारी, धर्म, भूमि, स्वामिधर्म, षरणागत की रक्षा और अपने वचन पालनार्थ यहां के वीरों ने हंसते–हंसते अपने प्राणों की बाजी लगाई है। राजस्थान की धरती पर बने वीरों के स्मारक, जूझारों की देवरे, सतियों और महासतियों की देवलियां इस बात के साक्षात प्रमाण है। राजपूतों के 36 कुलों में परमार वंष का पृथ्वी के सर्वाधिक भूभाग पर षासन किया है। परमारों के गढ़ या कोट कहे जाते थे परमारों के अधीन थे। इस संबध में राजस्थान ही नहीं पुरे भारत में यह लोकोक्ति रही हैं कि 'प्रथमी बडा परमार प्रथमी परमारा तणी'।

राजस्थान की पष्चिमी सीमा पर मारवाड़ और सिन्ध के मध्य स्थित रेगिस्तानी भू–क्षेत्र धाट धाट धरा के अमरकोट और नगर पारकर क्षेत्रों पर परमारवंषी राजपूतों की सोढा शाखा का लम्बे समय तक शासन रहा जो सोढांण कहलाता है। अमरकोट व नगरपारकर की धाट धरा का यह सोढाण क्षेत्र अतीत के आईने में भी अपना विषिष्ठ स्थान रखता है। यहां त्याग और संघर्ष की अनवरत परम्परा रही है। मारवाड़ के राठौड़ (आस्थानोंत) षासकों और धाट (अमरकोट) व पारकर के सोढा राजपूतों के बीच वैवाहिक व द्विपक्षीय सम्बन्ध तो उनकी राज्य स्थापना से ही रहे है। इन संबधों में परिस्थितियों के अनुरूप उतार–चढ़ाव आते रहे ,कभी मैत्रीपूर्ण तो कभी तनावपूर्ण भी रहे। आपसी हितों का टकराव भी परिस्थितियों के अनुसार दिखाई देता है। यह भी उल्लेखनीय है कि जब –जब मारवाड़ रियासत पर संकट आया तब–तब आह्वान किये जाने पर सोढा राजपूतों ने बिना अपने प्राणों की परवाह किये मात्र आमंत्रण पर उपस्थित होकर अपना पूर्ण सहयोग ही नहीं दिया बल्कि अपने प्राणों तक का भी बलिदान दिया। अनेक सोढा वीर योद्धाओं ने मारवाड़ राज्य के सैन्य अभियानों में भाग लेकर अपने प्राणों को न्यौछावर किया है। इस आलेख में ऐसे ही एक षूरवीर सोढा कीरतसिंह भोजराजोत द्वारा महाराजा मानसिंह के समय के बलिदान व उनके वीरत्वपूर्ण कृत्यों का विवेचन है ।

गौरवषाली इतिहास और उज्ज्वल अतीत का आगार राजपूताना राजपूती आन, बान और षान की रक्षा के लिए अपने प्राणों को हंसते–हंसते न्यौछावर वाले वीर–वीरांगनाओं की जन्मभूमि रहा हैं। गौ, ब्राह्मण, नारी, धर्म, भूमि, स्वामिधर्म, षरणागत की रक्षा और अपने वचन पालनार्थ यहां के वीरों ने हंसते–हंसते अपने प्राणों की बाजी लगाई है। राजस्थान की धरती पर बने वीरों के स्मारक, जूझारों की देवरे, सतियों और महासतियों की देवलियां इस बात के साक्षात प्रमाण

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582–046X
International Journal for Research in Applied History
Website : www.anshjournal.com

है। कर्नल टॉड लिखते है कि यहां के राजपूतों में उच्च कोटि का साहस, देषभक्ति, स्वामिभक्ति, स्वाभिमान, उदारता, धार्मिकता, और सादगी तथा आचरण इत्यादि गुण जन्मजात विद्यमान रहे हैं। इन गुणों के साथ ही वे युद्धप्रिय होते है। पराजित होने पर भागकर प्राण बचाने की अपेक्षा वे रणभूमि में मर जाना श्रेष्ठ समझते है।[1] राजस्थान के राजपूतों ने विदेषियों के अत्याचारों, अनीति, अन्याय के सामने अपने प्राणों को खोकर भी अपने पूर्वजों के संस्कार और सभ्यता को आज भी सुरक्षित रखा है, ऐसा उदाहरण विष्व–भर में देख पाना दुर्लभ है और यही राजपूत व राजस्थान का अनूठा गौरव हैं।

राजपूतों के 36 कुलों में परमार वंष का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है। परमार वंष ही एकमात्र राजपूत वंष है जिसने पृथ्वी के सर्वाधिक भूभाग पर षासन किया है। परमारों का मूल स्थान अरावली पर्वतमाला में आबू माना जाता है। आबू, मालवा, उज्जैन, आबू के परमारों का वंष–विस्तार बहुत हुआ और उन्होंने सिंध और मारवाड के अनेक स्थानों पर छोटे–छोटे ठिकाने कायम किये। इनमें नौ स्थान मुख्य थे जो परमारों के गढ़ या कोट कहे जाते थे और इन्ही नव कोटों के संकेत स्वरुप राजस्थानी साहित्य में मरुभूमि अर्थात मारवाड–प्रदेष की भूमि की सीमा का सूचन करने वाली नवकोटी–मारवाड़ यह लोकोक्ति प्रसिद्व हो गई। ये नौ कोट अर्थात गढ परमारों के अधीन थे।[2]

धाट किराडू पारकर, लोदरवौ जालोर।
आबू पूगल नागोर सूं नवकोटां मंडोर ।।[3]

इसलिए यह सारी भूमि परमारों की कही जाती थी । इस संबध में राजस्थान ही नहीं पुरे भारत में यह लोकोक्ति रही हैं कि 'प्रथमी बडा परमार प्रथमी परमारा तणी'।

राजस्थान की पष्चिमी सीमा पर मारवाड़ और सिन्ध के मध्य स्थित रेगिस्तानी भू–क्षेत्र धाट कहलाता है। इसी धाट धरा के अमरकोट और नगर पारकर क्षेत्रों पर परमारवंषी राजपूतों की सोढा शाखा का लम्बे समय तक शासन रहा, इसी कारण इस क्षेत्र को सोढांण भी कहा

गया है। धाट और पारकर दोनो का समन्वित क्षेत्र सोढाण प्रदेष है।[4] अमरकोट व नगरपारकर की धाट धरा का सोढाण क्षेत्र भी अतीत के आईने में अपना विषिष्ठ स्थान रखता है। यहां त्याग और संघर्ष की अनवरत परम्परा रही है। धाटधरा का भी इतिहास बलिदानों के अमिट परम्परा का साक्षी है। राणों रायमल, सोढा षिवराज, पूंजोजी सोढा, सोढा गजसिंह, रतन राणा, जेसोजी सोढा जैसे वीर सपूतों ने अपने रक्त से सींच कर व शीष का बलिदान देकर धरती का कर्ज चुकाया है ऐसे त्यागी और शौर्यवान पुरूषों का बलिदान युगों युगों तक यादों की जागीर में अक्षुण्ण रहता है। अखण्ड़ भारत का तत्कालीन अंग रहे परमारवंषी सोढा राजपूतों की रियासत धाट क्षेत्र भी अपनी वीरता, धीरता, बलिदान, त्याग, वचनपालन और दानवीरता के लिए विख्यात रहा है। सोढा राजपूतों की वीरता और दानवीरता जगजाहिर है।[5] सोढा राजपूतों की षौर्य और वीरता का द्योतक एक दोहा राजस्थान में बहुत प्रचलित है कि

सोढै ऊमरकोट रै, यों बाही अयवट्ट।
जाणै बेहूं भाइयां, आथ करी बै वट्ट।।[6]

अर्थात ऊमरकोट के सोढे ने तलवार मारी जिससे आक्रान्ता के षरीर के दो टुकड़े ऐसे समतुल्य हो गये मानो दो भाईयों ने पैतृक सम्पति का बंटवारा किया हो।

कवि बांकीदासजी ने हमरोट छत्तीसी में सोढों की कीर्ति का यषगान यों किया है–

एक एक सूं आगळा, रांणां ऊमरकोट ।
प्रगट हुवा परमार वै, मांणीगर मनमोट।।[7]

अर्थात परमार अथवा परमार षाखा के क्षत्रियों की सोढा नामक उपषाखा के ऊमरकोट के षासक अग्रगण्य सिद्ध हुए है, जिन्होने अपनी उदार चित–वृति, दानवीरता एवं पराक्रम से इतिहास में अपना नाम अमर कर लिया।

रांणा ऊमरकोट रा, गया जमारो जीत ।
ज्यांरा मंगळ धवळ में, गवरीजै जसगीत ।।[8]

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582–046X
International Journal for Research in Applied History
Website : www.anshjournal.com

अर्थात कवि बांकीदासजी कहते है कि ऊमरकोट के उदारमना एवं परम पराक्रमी षासकों की कीर्ति के गीत इस संसार में सर्वत्र सुनाई दे रहे है। ये सुयष के स्वर ही उन सोढा क्षत्रियों के लिए इतिहास में अपना नाम अमर कर लेने का सुदृढ़ आधार सिद्ध हुए है।

धाट धरा के प्रसिद्ध किले रतेकोट पर बाहड़मेर नगर के संस्थापक परमार राजा बाहड़राय के पौत्र और राजा चाहड़राय के पुत्र सोढा जी ने 1124 ई. में रता मुगल को मारकर अधिकार कर लिया था। सोढा जी के पौत्र राणा रायदे ने 1226 ई. में उमर सूमरा को पराजित कर अमरकोट किला जीता।[9] कालान्तर में सोढा राजवंष में राणा दुर्जनसाल, राणा खींवरों, राणा अवतारदे, राणा हम्मीर जैसे प्रतापी शासकों द्वारा अमरकोट शासित रहा है। सोढांण के धाट पारकर क्षेत्र के इतिहास का एक एक पृष्ठ साहस, मर्दानगी, दातारगी और वीरोचित प्राणोंत्सर्ग के कारनामों से जगमगा रहा है। राणा हम्मीर, राणा रायमल षिवराजोत, राणा रतन सुरताणोंत, राणा पूंजा ,हांसोजी सोढा सोढा वीरमदेव अवतारदेवोंत आदि सैंकड़ों ऐसे उज्ज्वल नाम है कि यद्यपि काल के प्रखर प्रवाह ने उन्हें मिटाने में कोई कसर नहीं छोड़ी फिर भी अभी तक जीवित है ओर सदा जीते तथा चमकते रहेगे। पर अफसोस की बात यह भी है कि यह सूरमा सिन्ध–हिन्द के इतिहासकारों की कलम बचे रहे या जानबुझ कर इन पर लेखनी चलाई नहीं गई, यह तो वहीं जाने।

मारवाड़ के राठौड़ (आस्थानोंत) षासकों और धाट (अमरकोट) व पारकर के सोढा राजपूतों के बीच वैवाहिक सम्बन्ध तो उनकी राज्य स्थापना से ही रहे है। यथा सोढा षाखा के मूल पुरूष व रताकोट के राणा सोढाजी का विवाह खेड़ के राठौड़ राव आस्थान की राजकुमारी रूपकंवर से हुआ था।[10] अमरकोट के राणा अवतारदेव का विवाह भी मंडोर के राव चूण्डा की राजकुमारी चम्पादे से हुआ था।[11] तथा राव सलखा, राव चंद्रसेन, राव मालदेव, महाराजा सूरसिंह, महाराजा भीमसिंह का विवाह भी अमरकोट के सोढाओं में यहां हुआ था तो वहीं राव मालदेव की राजकुमारी वाहला बाई का विवाह अमरकोट के सोढा रायसल गांगावत से हुआ था।[12] इन संबधों में परिस्थितियों के अनुरूप उतार–चढ़ाव आते रहे ,कभी मैत्रीपूर्ण तो कभी तनावपूर्ण भी रहे। आपसी हितों का टकराव भी परिस्थितियों के अनुसार दिखाई देता है। मंडोर

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582–046X
International Journal for Research in Applied History
Website : www.anshjournal.com

के षासक राव जाल्हणसी का अमरकोट के राणा दुर्जनषाल सोढा पर आक्रमण और, राव छाडाजी का अमरकोट के राणा दुर्जनषाल के बीच समझौता[13], राव सलखा के पुत्र जेतमाल द्वारा सोढा अखा व नंदा से राड़धरा का क्षेत्र लेना[14], राव मालदेव का अमरकोट को हस्तगत करने का प्रयास, महाराजा विजयसिंह का 1783–1813 ई. तक अमरकोट पर अधिकार रहना[15] आदि सैकड़ो दृष्टांत है।

इसी परम्परा का अनुसरण करते हुए सोढा राजपूतों ने जब –जब मारवाड़ रियासत द्वारा आह्वान किये जाने पर, बिना अपने प्राणों की परवाह किये मात्र आमंत्रण पर उपस्थित होकर अपना पूर्ण सहयोग ही नहीं दिया बल्कि अपने प्राणों तक का भी बलिदान दिया। सोढा सूरजमल, सोढा हरियोंजी,[16] सोढा गिरधर गोरधनोंत[17], सोढा नाथा दूदावत[18], सोढा जोगीदास लूणावत[19], सोढा कीरतसिंह भोजराजोंत[20] जैसे अनेक सोढा वीर योद्धाओं ने मारवाड़ राज्य के सैन्य अभियानों में भाग लेकर अपने प्राणों को न्यौछावर किया है तो महाराजा मानसिंह के समय मारवाड़ राज्य के सैन्य अभियानों में, सोढा करणसिंह प्रतापसिंहोंत[21] ,सोढा उदयसिंह[22], सोढो नाथू[23], सोढो विजो[24], सोढो चुतरो[25], सोढो सवाई[26], सोढो रतनो[27], सोढो राजू[28] सोढो विजो[29] सोढो महेसदास[30] आदि प्रमुख सहयोगी रहे है। इस सेवाओं व उपकारों के बदले में मारवाड़ के षासकों ने सोढा राजपूतों को खारिया सोढा (पाली), कलावास (जोधपुर), चूड़ियावास (नागौर), भूंका (बाड़मेर) मूंगड़ा (बाड़मेर) आदि कई गांव सोढा राजपूतों का जागीर में दिए थे जो आजादी तक इनके आधिपत्य में रहे। इस लेख का उद्देष्य मुख्यतः कीरतसिंह भोजराजोत के बलिदान का उल्लेख करना ही है इसलिए मारवाड़–अमरकोट सम्बन्धों पर विस्तृत प्रकाष डालना इस लेख के उद्देष्य के विपरीत होगा। इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी किसी अन्य आलेख में दी जायेगी।

इसी क्रम में अमरकोट के 19वें राणा भोजराजी हुए। राणा भोजराजी को भाईयों की गृहकलह के कारण राजगददी छोड़नी पडी। जनश्रुति के अनुसार निर्वासित राणा भोजराज ने पुनः रांणाप प्राप्त करने के लिए अपना प्रतिनिधि मण्डल मुगल बादषाह षाहजहां के दरबार में दिल्ली भेजा।[31] जिसकी संकेत राठौड़ो की ख्यात व नैणसी की ख्यात से मिलता है

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website : www.anshjournal.com

कि उमरकोट से सोढा माधोसिंह टीका लेने दिल्ली आया था जिसे भाटी केसरसिंह ने भाटी सुन्दरदास के वैर में मार डाला।[32] भाटी सुन्दरदास को जीणार (हाल पाकिस्तान) के सोढा ईष्वरदास ने जीणार मारा था। ईष्वरदास बैरसी खांप का सोढा था और गांव जीणार का निवासी था जिन्होने लवेरा गांव (जोधपुर) से भाटी सुन्दरदास का पषु हांक लिए थे जिस पर भाटी सुन्दरदास ने उसका पीछा किया था। यह माधोसिंह मानसिंहोंत सोढा जो जोधसिंह मानसिहोंत का पुत्र अमरकोट के राणा गांगा का प्रपौत्र था।[33] इससे यह प्रमाणित होता है कि राणा भोजराज ने राजगद्दी प्राप्त करने का प्रयत्न अवष्य किया था। षायद दिल्ली से बादषाह का फरमान समय पर नहीं आया हो क्योंकि हम राणा भोजराज के बाद उनके पुत्र ईष्वरदास को राणा पद पर पाते है।

अनुश्रुति के अनुसार राणा भोजराज राजगददी छुटने के बाद हंजतल में रहे वहां उन्हानें पक्की ईंटों का एक किला बनवाया और हंजतल में ही उनके समर्थकों व दौहट राठौडो आदि ने उनका दुबारा राजतिलक किया। इस संकट के समय में दौहट राठौडो ने उन्हें बहुत सहयोग किया था। उस समय से भोजराज सोढा, दोहट राठोड़ों को अपना भाई मानते आ रहे है, वे आज तक दोहट राठोड़ों की बेटियों को अपनी बहिन मानते है और उससे षादी नहीं करते है।[34] परन्तु सेना के अभाव, अन्य भाईयों के असहयोग व अर्थाभाव के कारण अपनी पूर्व स्थिति (राणा पदवी) प्राप्त नहीं कर सके। उनके वंषज हंजतल से छाछरो में आकर रहे। राणा भोजराज के वंषज भोजराज कहलाए। राणा भोजराज के एक वंषज और सोढांण धरा के ऐसे ही अमर कीर्ति के धनी वीरवर सोढा कीरतसिंह का नाम बड़े गर्व के साथ लिया जा सकता है जिन्होंने स्वामिधर्म की रक्षा का पालन अपने प्राणों का न्यौछावर कर दिया। यह वीर जोधपुर महाराजा मानसिंह के काल में बलिदान की सर्वोच्च परम्परा का पालन करते हुए मारवाड़ के इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों अंकित करवाके हमेषा के लिए देवलोक चला गया।

जब 1649 ई. (वि स 1706 मार्गषीर्ष वदि 2) में जैसलमेर के शासक मनोहरदास जी की निःसन्तान मत्यु हूई तो उनके द्वारा गोद लिए हुए महारावल मालदेव के पुत्र भानीदास के पौत्र व सियाजी (सिंघजी) के पुत्र रामचन्द्रजी और महारावल मालदेव के पुत्र खेतसिंह के

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582–046X
International Journal for Research in Applied History
Website : www.anshjournal.com

पौत्र सबलसिंह दयालदासोत के बीच उत्तराधिकार संघर्ष शुरु हो गया, रामचन्द्र जी रनिवास का समर्थन प्राप्त कर जैसलमेर के शासक बन गए।[35] इस मामले में उन्होनें अपने भाई–बन्धुओं एंव सान्मतों से कोई राय नहीं ली, फलः उसके भाईयों और सामन्तो ने मान्यता नहीं दी, दूसरी तरफ खेतसिंह के पौत्र व दयालदास के पुत्र सबलसिंह जो किषनगढ के शासक का भानजा था।[36] वह किषनगढ के शासक रुपसिंह की सेवा में था, उसने राजगददी प्राप्त करने का अभियान कर दिया। किषनगढ के शासक रुपसिंह की मुगल बादषाह शाहजहां को सिफारिस और जोधपुर के महाराजा जसन्वतसिह को पोकरण देने का वादा करके व उनकी मदद से रावल रामचन्द्र को यवन की तलाई व पोकरण के युद्वों में पराजित कर सबलसिंह जैसलमेर की राजगददी बैठ गया[37] रामचन्द्र जी अपने घोडे, ऊँट और आवष्यक सामान लेकर देरावर चला गया।[38]

रावल रामचन्द्रजी के देरावर चले जाने से सबलसिंह के सामने एक नई समस्या उत्पन हो गईं, वह यह थी कि रावल रामचन्द्र अमरकोट के राणा ईष्वरदास का दामाद था, अतएव उनका समर्थन रावल रामचन्द्र के प्रति स्वाभाविक ही था। सबलसिंह को पूर्ण सन्देह था कि सोढा राणा ईष्वरदास अपने दामाद को पुनः जैसलमेर का शासक बनाने का अवष्य उधोग करेगा और इस नई उत्पन समस्या का समाधान करना भी अत्यावष्यक था, इसलिए सबलसिंह ने अमरकोट कर यात्रा की[39] और वहां राणा ईष्वरदासजी के विरोधी सोढा गुट से सम्पर्क कर सबलसिंह ने अपने समर्थक सोढा सरदारो के सहयोग से अमरकोट के राणा ईष्वरदासजी को राजगददी से हटाकर राणा गांगा चांपावत के पुत्र और मानसिंह के पौत्र व जोधा के पुत्र जयसिंह को अमरकोट की राजगददी बिठाया।[40] नये राणा बने जयसिंह ने अपनी पुत्री सुजान कंवर का विवाह रावल सबलसिंह के साथ कर दिया।[41] इस वैवाहिक सम्बन्ध से मानसिंहोत सोढों को जैसलमेर के षासक का सहयोग मिल गया। इसकी पुष्टि नैणसी की ख्यात से भी होती हैं। नैणसी ने लिखा कि ईसरदास को जैसलमेर के रावल सबलसिंह ने वि.स. 1710 मे निकाल दिया। नैणसी अपनी ख्यात पृष्ठ संख्या 241 पर मानसिंह के पौत्र व जोधा के पुत्र जयसिंह को अमरकोट का टीका देने का उल्लेख भी करता हैं।[42]

इस प्रकार अमरकोट की राजगददी भोजराज सोढा खांप से छीनकर राणा गांगा के पुत्र मानसिंह के वंषजों मानसिंहोत सोढा खांप के अधिकार में आ गई। इस आपसी

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582–046X
International Journal for Research in Applied History
Website : www.anshjournal.com

गृहकलह में राणा ईष्वरदास की किसी युद्ध में मृत्यु हो गई तथा बाद में भाईयों की आपसी महत्वाकांक्षा चलते केलण सोढा आदि सोढां सरदारों के सहयोग से राजगददी पर मानसिंहोत सोढा जयसिंह से राणा गांगा चांपावत के पुत्र और सुरताणजी के पौत्र व आसकरणजी के पुत्र संग्रामसिंह राजगददी पर बैठ गये। इस प्रकार अमरकोट की राजगददी मानसिंहोत सोढा खांप से छीनकर राणा गांगा चांपावत के पुत्र और सुरताण के पौत्र व आसकरण के पुत्र संग्रामसिंह के अधिकार में आ गई। जो आज तक अमरकोट की राजगद्दी सुरताण सोढा खांप के पास हैं। तभी से अमरकोट के राणा का राजतिलक केलण सोढाओं के सगरा जी के धुड़े के मुखिया ही अपने अंगूठे के रक्त से करते है। अगस्त 2009 ई. में राणा हमीरसिंहजी साहब का तिलक रोहल गांव के केलण सोढा डलजी ने किया था।[43]

राणा भोजराजजी से अमरकोट की रांणाप गृह–कलह के कारण छुट गई थी । राणा भोजराजजी के चार पुत्र थे। राणा भोजराज की एक शादी जसोल के रावल दूदाजी (1619–1674 ई) की पुत्री से हुई थी। सबसे बडे पुत्र ईष्वरदास अमरकोट के राणा बने (सम्भवतः अन्य भाईयों व मुगल बादषाह के फरमान से राजगद्दी प्राप्त करने सफल रहे।) जो बाद में भाईयों की आपसी गृहकलह में मारे गए।[44] इनके एक पुत्र हमीर[45] था जिसका बाद मे वंष नहीं चला। राणा भोजराजजी के दूसरे पुत्र का नाम जोगीदास (जोगराजसिंह) था, इनके एक पुत्री ही थी, इसलिए इनका भी वंष नहीं चला।[46] तीसरे पुत्र का नाम जसवन्तसिंह था जिसके वंषज हंजतल, छाछरो, सिल, सोखरू, झपियों और पाणियों वाले भोजराज सोढा हैं। चौथे पुत्र का नाम अमरसिंह था जो जो जसोल के रावल भारमल का भानजा था, वह छाछरा से अपने ननिहाल जसोल जाकर रहे।[47]

राणा भोजराज की एक शादी जसोल के रावल दूदाजी (1619–1674 ई) की पुत्री से हुई थी। राणा भोजराजजी के चौथे पुत्र अमरसिंह, जसोल के रावल दूदोजी के भानजे थे।[48] वे अपने ननिहाल जसोल आ गए। उन्होने वहां रावल का कई सैन्य अभियानों में साथ दिया। 1634 ई में जब जसोल के रावल भारमल व महेषदास ने जोधपुर महाराजा गजसिंह प्रथम (1619–1638 ई.) के विरुद्व विद्रोह का झण्डा खडा किया उस समय रावल भारमल व महेषदास के योद्वाओं के साथ अमरसिह ने भी बखूबी उनका साथ दिया, जिसका उल्लेख जसोल के

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582–046X
International Journal for Research in Applied History
Website : www.anshjournal.com

इतिहास में डॉ भंवर भादानी ने इस प्रकार कियाा हैं।'' ये योद्वा थे राठौड देईदास, सोढा सांवलदास, अमरा भोजराजोत एवं मनोहरदास, सादूल, भाखरसी आदि।[49] इनकी संयुक्त सेना ने मारवाड राज्य में लूटपाट प्रारम्भ कर दी । वि स 1691/1634 ई के ज्येष्ठ मास में ईंदो के बालेसर नामक गांव को लूट लिया एवं वहां से 120 सांढे उठाकर ले गए।[50] इस प्रकार अमरसिंह के अपने ननिहाल जसोल आने की पुष्टि नैणसी की ख्यात से होती हैं। नैणसी ने अमरसिह बारे में लिखा कि वह मेहवे रावल भारमल के पास था। गॉव भूंका पटटे था।[51] नैणसी ने अमरसिंह के तीन पुत्र बताए हैं, सूरजमल, वैणीदास और हरिदास।[52] अमरसिंह गॉव भूंका मे रहे। अमरसिंह के बाद क्रमषः सूरजमलजी, भाखरसिंहजी, डूंगरसिंहजी और जगमालसिंहजी हुए। जगमालसिंहजी के पुत्र कीरतसिंह हुए। इस प्रकार अमरसिह के बाद पॉचवी पीढीं मे कीरतसिंह हुए।[53] कीरत सिंहजी भी अपने पुष्तैनी गांव भूंका मे रहे। तथा जसोल रावल जसवन्तसिंह के प्रधान रहे जिसकी पुष्टि तत्कालीन ऐतिहासिक स्रौतों से भी होती हैं। 1806 ईस्वी में कीरतसिंह जोधपुर आ गए।[54]

अक्टूबर 1803 में महाराजा भीमसिंह की आकस्मिक मृत्यु होने के कारण से जोधपुर का राज सिंहासन मानसिंह के हाथों में आ गया। उस समय पोकरण ठाकुर सवाईसिंह चम्पावत, स्वर्गवासी महाराजा भीमसिंह के पुत्र धौकलसिंह को राज सिहासन पर बिठाना चाहता था। एक और अपषकुन भी था जो मेवाड़ महाराणा भीमसिंह की पुत्री से संबंधित था। महाराणा की पुत्री कृष्णा कुमारी का रिष्ता जोधपुर महाराजा भीमसिंह से होना तय हुआ था। परन्तु महाराजा का स्वर्गवास हो जाने के कारण से उदयपुर महाराणा ने राजकुमारी का विवाह जयपुर महाराजा जगतसिंह के साथ करने का निर्णय लिया।[55] तब महाराजा मानसिंह ने जयपुर के पंचोली सताब राय को इस संबंध में लिखा साथ ही उसने उदयपुर महाराणा को भी कहलाया की आप यह सम्बन्ध अब जयपुर कैसे कर रहे है। किन्तु महाराणा ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। और टीका जयपुर रवाना कर दिया। मानसिंह ने अपनी सेना भेजकर टीका वापस उदयपुर भिजवा दिया।[56] उधर यह खबर जयपुर महाराजा जगतसिंह को मिला तो उन्होने मानसिंह से युद्ध करने हेतु तैयारिया शुरू की। दोनो राज्यों ने इस प्रष्न को अपने मान–सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्थात मूंछ का सवाल बना दिया। फलस्वरूप मराठो व पिडारियों के सहयोग से दोनो पक्षों के बीच 1807 ई. में गिंगोली (नागौर) में युद्ध हुआ। मानसिंह की पराजय हुई वह आकर जोधपुर

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582–046X
International Journal for Research in Applied History
Website : www.anshjournal.com

दुर्ग में बंद हो गये। जयपुर की सेना ने जोधपुर दुर्ग का घेराव कर लिया।[57] सवाईसिंह जो मानसिंह को हटाकर धौकलसिंह को जोधपुर राज्य सिहासन पर बिठाना चाहता था। इस पुरी घटना क्रम में अपनी पूरी ताकत लगाये हुये था। इस संकट के समय महाराजा मानसिंह ने अपने जागीरदारों सामन्तों और ठिकाने दारो को अपनी सहायतार्थ बुलाया।

उस समय जसोल के ठाकुर सूरतसिंह थे जो तटस्थ बने हुए थे। ठाकर नाहरसिंहजी जसोल के द्वारा मिली जानकारी के अनुसार रावल सूरतसिंह का तटस्थ रहने का कारण यह था कि सूरतसिंह और पोकरण ठाकुर सवाईसिंह मौसी के बेटे भाई थे। अतः इस युद्ध में उन्होने न तो सवाईसिंह पोकरण का साथ दिया, न महाराजा मानसिंह का। इसी कारण से महाराजा मानसिंह रावल सूरतसिंह से नाराज थे और उन्होने जसोल के दूसरी पांती के ठाकुर जामंतसिंह (जसवन्तसिंह) को खास रूका भेजकर इस युद्ध में आमंत्रित किया। जामन्तसिंह (जसवन्तसिंह) ने यह मौका उपयुक्त समझते हुए अपने सैन्य दल के साथ आकर महाराजा की सहायता की।[58] महाराजा भीमसिंह और मानसिंह के आपसी विरोध में जसवन्तसिंह महाराजा मानसिंह के पक्ष में रहे। महाराजा मानसिंह और जयपुर के महाराजा जगतसिंह की लड़ाइयों में जसवन्तसिंह, मोहकमसिंह महेचा, मानसिंह की ओर से जोधपुर दुर्ग की रक्षा पर रहे। इस समय उनका प्रधान कीरतसिंह सोढा उनके साथ मोर्चे पर गए। ठाकुर जसवन्तसिंह को महाराजा ने रासोलाई के मोर्चे पर तैनात किया।[59]

वि.सं. 1807 में महाराजा जगतसिंह जयपुर, महाराजा सूरतसिंह बीकानेर और ठाकुर सवाईसिंह पोकरण ने जोधपुर के घेरा डालकर जोधपुर के दुर्ग पर आक्रमण किया। तब लक्ष्मणपोल के बाहर रासोलाई की ओर से जयपुर की दादूपंथियों की फौज ने आक्रमण किया। इनका सामना करने के लिए, ठाकुर जसवन्तसिंह और उसके प्रधान सोढा कीरतसिंह ने किले की बारी खोलकर रात्रि में उन पर आक्रमण किया।[60] अपने स्वामी को संकट में देखकर कीरतसिंह सोढा की आंखों में खून उतर आया। विपत्ति काल में राजपूतों का असली चरित्र जाज्वल्यवान होंता है ऐसे समय में राजपूत सैंनिक रणक्षेत्र से भागना जानते ही नहीं बल्कि जब लड़ाई का रूख संदेहजनक होता है तो वे अपने घोड़े से उतरकर लड़ने लग जाते है और वीरतापूर्वक लड़ते–लड़ते अपने प्राणों का न्यौछावर कर देते हैं। कीरतसिंह के

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582–046X
International Journal for Research in Applied History
Website : www.anshjournal.com

सामने भी ऐसा क्षण उपस्थित हुआ। अपूर्व शौर्य का प्रदर्षन करता हुआ यह वीर बिजली की भांति शत्रु सेना पर टूट पडा और अपनी अंतिम सांस तक लडता हुआ तिल–तिल कट मरा। इस युद्व में कीरतसिंह सोढा वीरतापूर्वक लड़ता हुआ मारा गया।[61] कीरतसिंह के तलवार के 12–13 घाव लगे।[62] कीरतसिंह की वीरता, पराक्रम और षौर्य के साक्षी में स्वंय महाराजा मानसिंह जोधपुर ने ये पंक्तियां लिखकर अपनी श्रद्धांजली अर्पित की । महाराजा मानसिंह ने स्वयं कीरतसिंह की वीरता से प्रभावित होकर यह दोहा कहा था –

तन झड़ि तेगां तीख, पौल तणौ मुख पौढियौ।
किरतो नग क्रोड़ीक, जड़ियौ गढ़ जोधाण रै।।[63]

अर्थात युद्व में तलवार की धार से धड़ भले ही खण्ड–खण्ड गिर गया किन्तु शत्रु दल के अनेक वीरों को मार कर मरने वाले, कीरतसिंह तू जोधपुर दुर्ग में करोड़ों की कीमत के कीर्ति रुपी नगीने की तरह सदा शोभा पाता रहेगा।

किसी अज्ञात कवि द्वारा रचित यह दो सोरठे भी कीरतसिंह की बहादूरी और वीरता की साख भरते है–

सोढ़ा जस साराह, किरताणी थारा करै।
भुजळग हथ भाराह, वारा इण लीधा वड़म।[64]

अर्थात हे सोढा कीरतसिंह तेरे भुजाओं तक हाथ भारी है, तूने बड़प्पन दिखाते हुए युद्ध में अमरता प्राप्त की इसलिए सोढा तेरे यष की सभी सराहना करते है।

पांणी रजवट पूर, वाणी चख अम्रत वसै।
सांचाणी रण सूर, किरताणी बीकम करण।।[65]

अर्थात जिसका पानी (इज्जत, आत्मसम्मान) रजवट से पूरित था, वाणी अमृत तुल्य थी, वह कीरतसिंह सचमुच में रण–सूर(युद्धवीर) था।

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582–046X
International Journal for Research in Applied History
Website : www.anshjournal.com

इस युद्ध में वीरगति प्राप्त हो जाने पर कीरतसिंह की स्मृति को चिरस्थाई बनाने हेतु महाराजा मानसिंह ने जयपोल के अन्दर उनकी छत्री बनाई गई जो आज भी विद्यमान है। महाराजा ने उसके परिवार के निर्वाह हेतु मुंगडा नामक गांव दिया जो आज भी उसके वंषज के आधिपत्य में है।[66] इसी पृष्ठ की टिप्पणी के अनुसार जोधपुर रिकॉर्डस बस्ता नम्बर 97/15 हुकमसिंह भाटी डुंगला नामक गांव देना लिखते है इसके अतिरिक्त उसने लिखा है कि कीरतसिंह को मालाणी से फौज बल के 100 रू. मिलते थे। जिसके लिए उसने किसी स्त्रोत को उद्धृत नहीं किया है।[67] जसंवतसिंह की इस वीरता पर उसे सिरोपाव और ताजामी तथा कीरतसिंह के पुत्र को भूंका नामक गांव दिया।[68] इसकी अन्य कई स्रोतो से होती है।

श्री कीरतसिंह सोढ़ा का अभिलेख[69]

समय : (स्वर्गवास) वि.सं. 1864, सावन वद 2

स्थान : मेहरानगढ़ की जयपोल के अन्दर, लौटते समय दायीं ओर की छतरी, जोधपुर

विषय : उपर्युक्त संवत् में सोढ़ा कीरतसिंह जगमालोत, जो भूका गांव (बाड़मेर) का जागीरदार ठाकुर और जसोल के स्वामियों का प्रधान था – वह रासोलाई (जोधपुर – दुर्ग के पूर्व में स्थित तलाई) के मोर्चे पर लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। लेख पंक्तियां – 4

उपलब्धि सूत्र :

1 फोटो कॉपी, ' महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाष शोध केन्द्र, जोधुपर।

2 श्री कीरतसिंह सोढा की जयपोल में स्थित छतरी।

3 'वरदा' वर्ष 33, अंक 2, अप्रैल – जून 1990 में प्रकाषित श्री रामवल्लभजी सोमानी का लेख – 'जोधपुर के कुछ स्मृति लेख'। श्री गोविन्दलाल श्रीमाली की शोध की डायरी से।

मूलपाठ

1 ''सं. 1864 रा विषे (वर्षे) मीती सावण वद 2 गढ़ जोधपुर....

2 – र रा घेरा मै सोढौ किरतसींध जगमालौत जसो.....

3 – ल महेवा रा धणीयां रो परधान गॉव भूका रौ

4 धणी मोर छै (चे) रासोलाई ऊपर ज (झ) गडौ हुवौ तरी काम आया।''

नोट :

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582–046X
International Journal for Research in Applied History
Website : www.anshjournal.com

प्रस्तुत अभिलेख का विक्रम संवत् श्रावणादि है, जो सावन वदि 1 से शुरू होकर आषाढ सुदि 15 को समाप्त हो जाता है। यह मारवाड़ कृत संवत कहलाता था, इस तरह जोधपुर दुर्ग का यह घेरा पॉच मास के लगभग रहा। वि.सं. 1864 भाद्रपदे सुदि 13 को जयपुर की फौजें घेरा उठाकर चली गयी।

सोढाण लोक संस्कृति और डिंगळ साहित्य के जानकार कवि संग्राम सिंह सोढा सचियापुरा,बज्जू (बीकानेर) अपनी रचना ''सो धरती सोढांण'' (प्रेस में) में 'सोढाण रे सूरां सपूतां नै रंग' प्रंसग में कीरतसिंह सोढा की षूरवीरता का वर्णन कुछ इस प्रकार करते है कि– [33]

किरतो सोढा केहरि, भोजराज सा भाण |

जोधाणे हिट जूझियो, सो धरती सोढाण ||

कीरतसिह के युद्ध में काम आने के बाद महाराजा मानसिह ने उनके पुत्र जोगराजसिह को मूंगड़ा गांव जागीर में दिया जो आज भी उनके वंषजो के पास है। 1815 ई. में महाराजा मानसिह ने जोगराजसिह को सिरोपाव, एक सोना की कड़ा की जोड़ी, बाला बुन्दी आदि से सम्मानित किया। मुंगड़ा गांव जोधपुर से अग्नि कोण में 84 किलोमीटर दूरी पर है तथा सिवाना से उतर में 15 किलोमीटर में है। गांव में एक तालाब तथा 4 बैरिया है।[70] मारवाड़ री परगना की फरसत पृष्ठ सं. 110 में लिखा है कि मूंघड़ो गांव 9 कोस तक जोगराज कीरत के पट्टे में है जिसकी रेख 1250 रूपया है। यहां गेहूं की खेती होती है रेल आती है तथा रैयत पालीवाल है। 115 रूपया जमा लाग के भरे जाते है।[71]

वर्तमान में सोढा कीरतसिंह के वंषज मूंगड़ा के ठाकुर भूरसिंह सोढा आसपास के क्षेत्र में प्रतिष्ठित व्यक्तित्व है। वे एक बार प्रधान तथा दो बार सरपंच रह चुके है उनके पुत्र कुंवर जितेद्रसिंह भी सरपंच रहे है। जितेद्रसिंह के दो पुत्र है उदयभानसिंह और युवराजसिंह। आज कीरतसिंह भले ही जीवित नहीं है लेकिन उनकी कीर्ति युगों–युगों तक इतिहास के उज्ज्वल पन्नों में उत्कीर्ण रहेगी। जब तक मारवाड़ की वसुंधरा पर रंणबका राठौड़ राव जोधा द्वारा निर्मित जबरो गढ़ चिन्तामणि मेहरानगढ़ अडिग रहेगा तब तक सोढा कुळषिरोमणि वीरवर कीरतसिह सोढा की छतरी दुर्ग के प्रवेषद्वार पर कोहिनूर हीरे की तरह उसकी कीर्ति, पराक्रम, षौर्य व बलिदान की अमर गाथाएं सुनाती रहेगी।

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582–046X
International Journal for Research in Applied History
Website : www.anshjournal.com

सन्दर्भ सूची

1. टॉड, कर्नल जेम्स, राजस्थान का इतिहास, अनुवाद कालूराम शर्मा, श्याम प्रकाषन जयपुर 2013, पृ. 272
2. कविया चिमनजी, सोढायण, सम्पादक, शक्तिदान कविया राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान,जोधपुर, 1966, पृ. ख (संचालकीय वक्तव्य)
3. कविया, शक्तिदान, धरा सुरंगी धाट, ठा जैतमालसिंह सोढा, धाट धरा, जोधपुर, 2009 पृ. 17
4. कविया चिमनजी, सोढायण, सम्पादक, शक्तिदान कविया राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान,जोधपुर, 1966, पृ. 24
5. कविया, शक्तिदान, धरा सुरंगी धाट, ठा जैतमालसिंह सोढा, धाट धरा, जोधपुर, 2009 पृ. 19
6. चुण्डावत, रानी लक्ष्मीकुमारी, राजस्थानी दोहा संग्रह , नेषनल प्रिटिंग प्रेस जयपुर, 1960, पृ. 38
7. सिंह प्रो. चन्द्रमौलि एवं डॉ. प्रियंका पारीक, बांकीदास ग्रन्थावली, इंडियन सोसायटी फॉर, एजुकेषनल इनोवेषन, जयपुर, 2013, पृ. 385
8. वही पृ. 385
9. सौलंकी, तेजसिंह, अमरकोट सिन्ध जो इतिहास, (अमरकोट तवारीख), सिन्ध, 1935, पृ. 7
10. नगर, डॉ. महेन्द्रसिंह (सम्पादक), राणीमंगा भाटो की बही (मारवाड़ का रनिवास), महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाष शौध केन्द्र मेहरानगढ़, जोधपुर, 2002, पृ. 3
11. वही पृ. 105, xxi, आषिया, मोड़जी, पाबू प्रकाष, संपादक– आषिया शंकरसिंह, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2009, पृ. 265, सौलंकी, तेजसिंह, अमरकोट सिन्ध जो इतिहास, (अमरकोट तवारीख), सिन्ध, 1935, पृ. 26, हरिजन,रायचन्द, रेगिस्तान जी तवारीख, वॉल्यूम 1, सिन्धी अदबी बोर्ड, जामसोरो, सिंध,1956, पृ. 76, राजपूत, अमर रायसिंह, सोढा चुतर सुजान, सूमरोती पब्लिकेषन, मिटृठी, पारकर, सिंध 2018, पृ. 22
12. नगर, डॉ. महेन्द्रसिंह (सम्पादक), राणीमंगा भाटो की बही (मारवाड़ का रनिवास), महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाष शौध केन्द्र मेहरानगढ़, जोधपुर, 2002, पृ. 5, 27, 28, 30, 39, 71,
13. भाटी, हुकमसिंह (सम्पादक), राठौड़ां री ख्यात भाग– 1, इतिहास अनुसंधान संस्थान, चौपासनी, जोधपुर, 2007, पृ. 20–21
14. वही पृ. 22, राठौड़, भूरसिंह(प्रधान संपादक), कवि बादर दाढी कृत वीरवांण, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2015, पृ. 39
15. हरिजन,रायचन्द, रेगिस्तान जी तवारीख, वॉल्यूम 1, सिन्धी अदबी बोर्ड, जामसोरो, सिंध,1956, पृ. 35

16. अभिलेखागार बीकानेर के जोधपुर बस्ता संख्या 92 ग्रंथांक 4 पृ. 36
17. भाटी, हुकमसिंह (सम्पादक), राठौड़ां री ख्यात भाग–1, इतिहास अनुसंधान संस्थान, चौपासनी, जोधपुर, 2007, पृ. 237
18. भाटी, हुकमसिंह (सम्पादक), राठौड़ां री ख्यात भाग–1, इतिहास अनुसंधान संस्थान, चौपासनी, जोधपुर, 2007, पृ. 83
19. भाटी, हुकमसिंह (सम्पादक), राठौड़ां री ख्यात भाग–2, इतिहास अनुसंधान संस्थान, चौपासनी, जोधपुर, 2007, पृ. 317
20. भाटी, हुकमसिंह (सम्पादक), राठौड़ां री ख्यात भाग–3, इतिहास अनुसंधान संस्थान, चौपासनी, जोधपुर, 2007, पृ. 743
21. पालावत, डॉ भवानीसिंह (सम्पादक) महाराजा मानसिंह जी री तवारिख, राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी एवं महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाषन शोध केन्द्र जोधपुर, 2013, पृ. 73,
22. वही पृ. 132
23. वही पृ. 57
24. वही पृ. 104
25. वही पृ. 64
26. वही पृ. 86
27. वही पृ. 107
28. वही पृ. 112
29. वही पृ. 68
30. वही पृ. 69
31. साक्षात्कार, कृष्णसिंह सोढा गांव गौड का तला,चौहटन, जिला बाड़मेर
32. भाटी, हुकमसिंह (सम्पादक), राठौड़ां री ख्यात भाग–1, इतिहास अनुसंधान संस्थान, चौपासनी, जोधपुर, 2007, पृ. 252, नैणसी मुहणोत, नैणसी री ख्यात (भाग 1 व 2), प्रधान संपादक श्री बदरीप्रसाद साकरिया, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1961, पृ. 241
33. नैणसी मुहणोत, नैणसी री ख्यात (भाग 1 व 2), प्रधान संपादक श्री बदरीप्रसाद साकरिया, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1961, पृ. 241
34. साक्षात्कार, हठेसिंह सोढा गांव बोला, देवीकोट, जिला जैसलमेर

35. भाटी, हुकमसिंह, भाटी वंष का गौरवमय इतिहास (भाग–1 व 2), भाटी इतिहास समिति, जोधपुर, 2013 पृ. 197
36. वही प197
37. सेवक, लक्षमीचन्द, तवारीख जैससमेर, चिराग राजिस्थान व राजपूताना गजट यत्रांलय,अजमेर,1891, पृ. 59
38. मयंक, डॉ. मांगीलाल व्यास, जैसलमेर राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2011, पृ. 95
39. माहेष्वरी, डॉ. हरिवल्लभ, जैसलमेर का इतिहास, द हरीटेज, ग्वालियर, 2006, पृ. 85
40. नैणसी मुहणोत, नैणसी री ख्यात भाग 2, प्रधान संपादक श्री बदरीप्रसाद साकरिया, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1961, पृ. 236, भाटी, हुकमसिंह (सम्पादक), राठौड़ां री ख्यात भाग–1, इतिहास अनुसंधान संस्थान, चौपासनी, जोधपुर, 2007, पृ. 205
41. माहेष्वरी, डॉ. हरिवल्लभ, जैसलमेर का इतिहास, द हरीटेज, ग्वालियर, 2006, पृ. 85
42. नैणसी मुहणोत, नैणसी री ख्यात भाग 2, प्रधान संपादक श्री बदरीप्रसाद साकरिया, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1961, पृ. 241
43. वार्ता,भाटी नाथूसिह, मिठ्ठी, सिन्ध, पाकिस्तान
44. सोढा, कृष्णसिंह का लेख, संघ शक्ति, मासिक पत्रिका नवम्बर,2013 पृ. 27
45. नैणसी मुहणोत, नैणसी री ख्यात भाग 2, प्रधान संपादक श्री बदरीप्रसाद साकरिया, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1961, पृ. 236
46. सोढा, कृष्णसिंह का लेख, संघ शक्ति, मासिक पत्रिका नवम्बर,2013 पृ. 27
47. नैणसी मुहणोत, नैणसी री ख्यात भाग 2, प्रधान संपादक श्री बदरीप्रसाद साकरिया, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1961, पृ. 236
48. सोढा, कृष्णसिंह साक्षातार
49. भादानी, डॉ. भंवरलाल, जसोल का इतिहास भाग–1, संपादक ठा. नाहरसिंह जसोल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2018, पृ. 312
50. वही पृ. 312
51. नैणसी मुहणोत, नैणसी री ख्यात भाग 2, प्रधान संपादक श्री बदरीप्रसाद साकरिया, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1961, पृ. 236
52. वही पृ. 312

53. ख्यात खांप सांखला व सोढारी, अपुराअभिलेखीय स्त्रोत, अभिलेखागार बीकानेर के जोधपुर बस्ता संख्या 101 ग्रंथांक 8, पृ. 36
54. वही पृ. 312
55. भादानी, डॉ. भंवरलाल, जसोल का इतिहास भाग–2, संपादक ठा. नाहरसिंह जसोल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2018, पृ. 221
56. शर्मा, पद्यजा, जोधपुर के महाराजा मानसिंह और अनका काल (1803–1843), राजस्थान हिन्दी ग्रंन्थ अकादमी, जयपुर,1970, पृ. 37
57. वही पृ. 49, 51
58. भादानी, डॉ. भंवरलाल, जसोल का इतिहास भाग–2, संपादक ठा. नाहरसिंह जसोल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2018, पृ. 76
59. तेमावास, ठा. नाहरसिंह, मल्लीनाथ वंष प्रकाष भाग– 1, अमर बसन्त प्रकाषन, तेमावास, बाड़मेर, 2018, पृ. 397
60. वही पृ. 397
61. वही पृ.397
62. ख्यात खांप सांखला व सोढारी, अपुराअभिलेखीय स्त्रोत, अभिलेखागार बीकानेर के जोधपुर बस्ता संख्या 101 ग्रंथांक 8,पृ. 36
63. तेमावास, ठा. नाहरसिंह, मल्लीनाथ वंष प्रकाष भाग– 1, अमर बसन्त प्रकाषन, तेमावास, बाड़मेर, 2018, पृ. 397,
64. शेखावत, शौभाग्यसिंह, मालानी के गौरव,राणी भटियाणी ट्रस्ट,जसोल, 1993, पृ. 380
65. वही पृ. 380
66. भादानी, डॉ. भंवरलाल, जसोल का इतिहास भाग–2, संपादक ठा. नाहरसिंह जसोल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2018, पृ. 226
67. वही पृ.226
68. भादानी, डॉ. भंवरलाल, जसोल का इतिहास भाग–1, संपादक ठा. नाहरसिंह जसोल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2018, पृ. 397
69. भादानी, डॉ. भंवरलाल, जसोल का इतिहास भाग–1, संपादक ठा. नाहरसिंह जसोल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2018, पृ. 507–508

70. ख्यात खांप सांखला व सोढारी, अपुराअभिलेखीय स्त्रोत, अभिलेखागार बीकानेर के जोधपुर बस्ता संख्या 101 ग्रंथांक 8,पृ. 36
71. भाटी, डॉ. हुकमसिंह, मारवाड़ रा परगनां री फरसत, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर, 2005, पृ. 110
72. नैणसी मुहणोत, नैणसी री ख्यात भाग 2, प्रधान संपादक श्री बदरीप्रसाद साकरिया, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1961, पृ. 236, भाटी, हुकमसिंह (सम्पादक), राठौड़ां री ख्यात भाग–1, इतिहास अनुसंधान संस्थान, चौपासनी, जोधपुर, 2007, पृ. 205, राव, अर्जुनदान, मठ ख्याला, मठ ख्याला म्याजलार, जैसलमेर, 1990, पृ. 110 व ठाकुर भूरसिंहजी से वार्ता।

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582–046X
International Journal for Research in Applied History
Website : www.anshjournal.com

सोढा कीरतसिंह जगमालोत का वंशवृक्ष[७२]

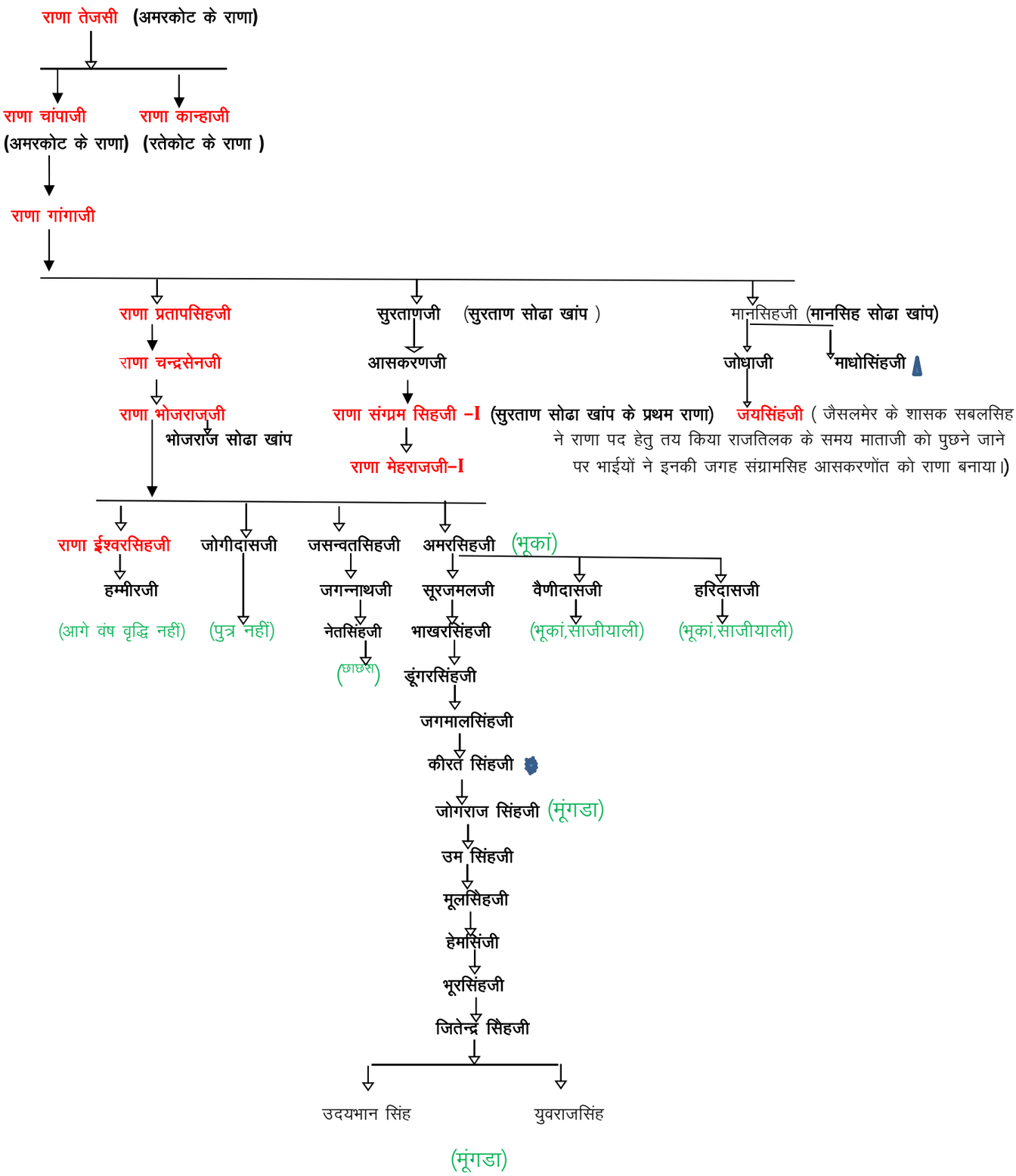

1652 ई. में राणा भोजराज का पुनः टीका लेनें मुगल बादशाह शाहजहां के पास दिल्ली गया जहां भाटी केसरसिंह ने लवेरा के भाटी सुन्दरदास के वैर में मारा।

मूंगड़ा के ठाकुर भूरसिंहजी सोढा से दूरभाषवार्ता

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582–046X
International Journal for Research in Applied History
Website : www.anshjournal.com

वीरवर कीरतसिंह सोढा की छतरी का शिलालेख

(मौका मुआयना –17.07.2019)

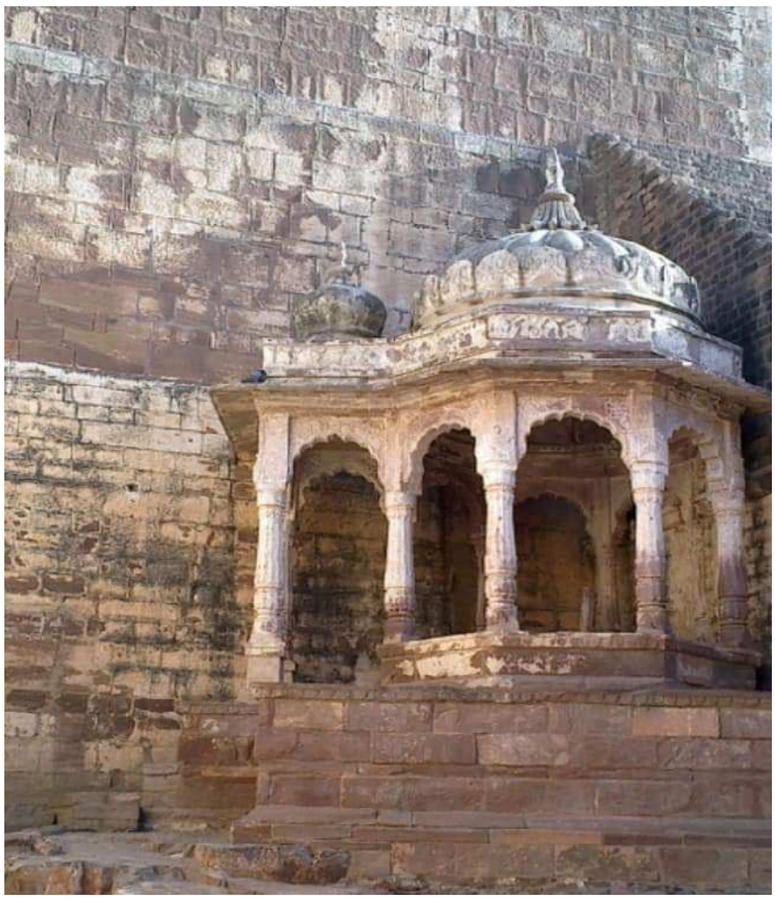

मेहरानगढ़ दुर्ग के प्रवेशद्वार जयपोल के अंदर बांयी तरफ स्थित वीरवर कीरतसिंह सोढा की 8 खम्भों की छतरी

(मौका मुआयना –17.07.2019)